

Class-XII

Hindi Core(302)

$$T = \frac{4\pi k}{\lambda}$$

उत्तर

(१)

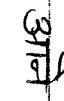
वायु की झुक्ता



उत्तर

(२)

समस्या सिर पर आने पर ही समाधान करते हैं



उत्तर

(३)

जल की गति जहाँ पर मुख्या लगता है



उत्तर

(४)

जल असमें प्रदूषण तोड़ी की अविकल्प है



उत्तर

(५)

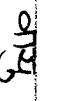
प्रदूषित जल जलने वाला की चिह्नित उच्चना होता है।



उत्तर

(६)

स्थानीय जल पर वायु - प्रदूषकीय



(प्र०)
उत्तर

d) प्रदूषित हवा विश्व - याथि समस्या है।

(प्र०)

(प्र०)
उत्तर

a) प्रदूषित हवा को शुद्ध करने के लिए

(प्र०)
उत्तर

b) दिनोंदिन हवा में घटता प्रदूषण

(प्र०)
उत्तर

c) कथन (A) सही है, लेकिन कार्बो (R) कथन (A) की गलत व्याख्या है

प्रश्न - 2

कार्बोरेशन - 1

(प्र०)

c) गोगा जड़ी का बढ़ा जल - उत्तर

(प्र०)

c) गोगा जड़ी का बढ़ा जल - उत्तर

उत्तर

- a) गोंगा - जल धनि रजत परिधान

(iii)

उत्तर

- d) घर का मजबूत हीना

(iv)

उत्तर

- b) पतली

(v)

उत्तर

- d) उपसा

$$\text{प्रधन} = 3$$

(i)

उत्तर

- c) शीर

(ii)

उत्तर

- a) अमेरिका में गृह - युद्ध के दौरान

(०१०)
उत्तर

c) वेब डुनिया के साथ



(०१०)
उत्तर

b) शाठदी° और द्वितीयो° का



(०१०)
उत्तर

a) विशेष रिक्ति



$$\text{प्रश्न} = 4$$

(०१०)
उत्तर

c) कागज के उस पट्टी का जिस पर स्थन शाठ - अहु है उसे



(०१०)
उत्तर

c) आवनाऊ° और विचारो° का बीच



(०१०)
उत्तर

c) कल्पना



6

(iv) उत्तर

- a) शारदी ० की अंकुर सहे ✓

(v) उत्तर

- b) काट्य - इच्छा प्रक्रिया की ✓

$$\text{प्रश्न} = 5$$

(vi) उत्तर

- a) खेती ० मैं बीज बीना ✓

(vii) उत्तर

- c) पानी का दान - मुख्य करना पड़ता है ✓

(viii) उत्तर

- d) दान - मुख्य की महत्वा समझने के लिए ✓

(ix) उत्तर

- d) दान - मुख्य की महत्वा समझने के लिए ✓

उत्तर

d) पानी की दूरी सेवा पर उल्लंघन

$$\text{प्रदूषन} = 6$$

(I)
उत्तर

a) प्राणी और धर्मचौ. से वैज्ञानिक मतभीद हीने के कारण

(II)
उत्तर

b) अपने परिवार की जासूज ज करने के कारण



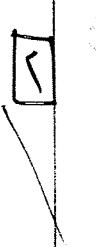
(III)
उत्तर

c) उनका अपने परिवार से मतभीद रहने लगा



(IV)
उत्तर

c) वे इसे विदेशी कस्टम मानते हैं



(V)
उत्तर

d) ईश्वर की अद्वी ज्ञानी कीमत माने के लिए



(v)
उत्तर

c) शाम की खेती में सिंचाव करना।

(vi)
उत्तर

a) सहायियों के पास ही आगे की कक्षा में जले जाने के कारण

(vii)
उत्तर

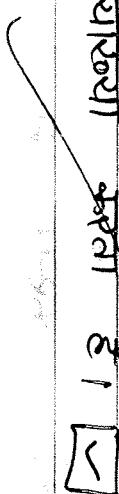
d) बौद्ध स्तुप

(viii)
उत्तर

a) कर के सप्तमो इकान्त अनाज रखने के लिए

(ix)
उत्तर

a) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कथन (R)



प्रश्न = ५

[CHOICE - १]

- १) शहरों में वडती ट्रॉफिक जाम की समस्या ०

आज के समय में अगर कोई समस्या जीवों को सबसे ज्यादा परेशान कर रही है तो वह है — शहरों में बदती ट्रॉफिक जाम की समस्या। इस समस्या के साथ कई और समस्याएँ भी जुड़ी हुई हैं जैसे — इवनि प्रदूषण की समस्या। शहरों में जाम तो ऐसी हर समय रहता है परंतु सबसे ज्यादा ट्रॉफिक जाम सुबह व शाम की काम, सूखल व दफ्तर से जाते समय के बच्चे की गिरना है।

ट्रॉफिक जाम के कारण जीवों की दृवनि प्रदूषण का जिसकी कारण जीवों में

अनेक विमारियाँ ही जाति हैं। त्रिचंकी, सिरमेर में दर्द, औरवो में जलन आदि विकार चेदा ही जोते हैं। दृष्टिकूल जाम की कारण कई भार मरियों की अपनी जान से हाथ धीना पड़ता है। चौरोंकि दृष्टिकूल जाम के कारण कई घार इन्हुलेस की निकलने का मौका ही नहीं। चिलता जिससे मरीज की कई भार जान भी चली आती है।

दृष्टिकूल जाम लगने की कई कारण ही संकेत हैं। जिनमें से प्रमुख कारण है — सड़कों की स्थिति और जन से होना। सड़कों की दृष्टि-छृष्टि हालत व गड़ी से आवागमन में विचकत आती है जिससे फिर जाम लगता है। बाहनी का गलत भाड़न में चलना भी दृष्टिकूल जाम लगने का एक कारण ही सकता है। कई घार निः पर हड्डी उधटना की कारण भी जाम लगता है। दृष्टिकूल भाड़ों का जन होना भी जाम लगने का एक कारण है।

शहरी० मैं० बढ़ती औरिक जाम की समस्या को कम करने
 के लिए हमें वे सरकार की सोडी प्रयास करने चाहिए।
 सरकार की साइको० की मरम्मत करवानी चाहिए। साइको०
 पर फ्रैंकिंग लाइट लगावानी चाहिए। जीवों की भी उपनी
 जैन की शैड मैं ही चलना चाहिए। बढ़ती औरिक जाम
 की समस्या को कम करने के लिए हम फ्रैंकिंग के
 माननीय मुख्यमन्त्री जी अवधि के जरीबाल जी के द्वारा
 ही फ्रैंकिंग मैं लागू किया गया आ॒-इवन सिस्टम
 द्वारा सकते हैं। इसके अलावा हम सार्वजनिक वाहनों
 के रस्तमाल की बढ़ावा दे सकते हैं।

$$\text{प्रश्न} = 8$$

(ए)

उत्तर :- ईयो नाटक :- ईयो नाटक एक भ्रष्ट माध्यम है। इसमें
 सिनेमा वे रामेण्य की तरह उत्तर्य नहीं होते।

इसमें सब कुछ इतनी व संवादों के माध्यम से अप्राप्त किया जाता है। ऐतिहासिक नाटक के लिए संवाद लिखते समय निम्नलिखित सामग्रीनियों भरतनी चाहिए —

- (1) ऐतिहासिक नाटक के संवाद छोटे, संस्कृत व मध्यावशाली होने चाहिए।
- (2) संवाद आम घोलचाल की शाबा में होने चाहिए।
- (3) जब संवादों से तारतम्यता बनाए रखना मुश्किल हो जाता है इसलिए उनका प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- (4) संवादों की पात्रों की माफ्यम से कहना होने चाहिए।
- (5) संवाद उत्त्यारण व लवा शुद्धि से युक्त होने चाहिए।
- प्रयोगिक शोता संवादों व आवाज के माध्यम से ही पात्रों की याद रखा जाता है।
- (6) कथानक की संवादों होरा की संवाद मिथ्या जाता है।
- (7) कहानी का उद्देश्य संवादों के माध्यम से शोताओं तक पहुँचाया जाता है।

(ग)

उन्नरम् कहानी का नाट्य रूपोत्तरण :-

कहानी की मींच पर आव-

बुंदिमाओँ के साथ प्रस्तुत करना, कहनी का नाट्य रूपोत्तरण कहलाता है। नाटक एक दैखी भाष्य-विद्या है, जिसे पढ़ने, लिखने के साथ-साथ देखा भी जा सकता है।

कहानी की नाटक में रूपोत्तरित करने हेतु आवश्यक विद्युतिकालिका है। →

(1) कहानी की विस्तृत कथावस्तु का समय और स्थान के आधार पर विभाजन।

(2) एक घटना एक समय व एक स्थान पर घटने पर एक हृष्य की बोला।

(3) दूर्योँ का कथावस्तु के अनुसार निधारिण।

(4) दूर्योँ का सीं प्रतिशित औचित्य होना - चाहिए।

(5) मींच खोजना, दृष्टि व प्रकाश की व्यवस्था का प्रबंध करना।

प्रश्न संख्या = ७

(क)

उत्तर ८ उियो और मी० बी० के लिए समाचार मुख्यतः उन्होंने विरामित छोड़ी में लिखे जाते हैं।

समाचार लिखते समय ह्यान द्वारा जो आते निम्नलिखित हैं

- (१) साफ - सुखरी व गाढप बैंध कोपी हीनी - चाहिए।
- (२) एक लाडन में १२ - १३ शाठद ही हीनी - चाहिए।
- (३) कोपी ट्रिपल स्वेस में गाढप हीनी - चाहिए।
- (४) लाडन के अंत में कोई भी शाठद विघाजित नहीं होना - चाहिए।
- (५) सोंधताधर का प्रयोग नहीं करना - चाहिए।
- (६) निम्नलिखित क्रमांक, हस्तासरित आदि शाठदों का उपयोग नहीं करना - चाहिए।
- (७) तथा, व, किंतु ; परंतु आदि शाठदों के स्थान पर और, या, लैकिन शाठदों का प्रयोग करना - चाहिए।

(8) सीधी, सरल व आम बोलचाल की भाषा में अपनी बात लिखनी -चाहिए।

(9) स्थानोंतरा की जगह लबादला, पॉकिट की जगह कतार आदि शब्दों को प्रयोग करना -चाहिए।

(10) नियमित दिनोंके लिए उसी प्रकार लिखना -चाहिए जिस प्रकार हम लैलते हैं। ऐसे 2 करवरी दो हजार तीन।

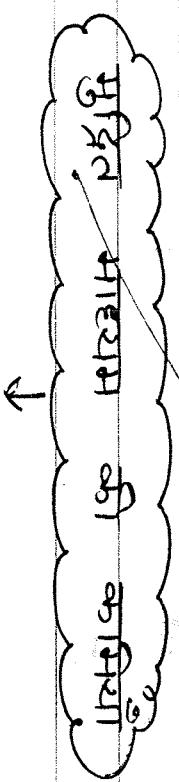
(A)

आरए जनसंघार के आधुनिक माह्यमों में सबसे मुख्यना माह्यम प्रिंट माह्यम है। मुझ्हा की लुकआउट-वीन में हड्डी चीज़ी गतिमान छवियाँ खाली की आविष्कार का नेत्र जमिनी की गुटेनबर्गी को जाता है।

मुख्यत माह्यम की खबरियाँ

- (1) छपे हुए शब्दों में स्थायित्व होता है।
 (2) आप आपनी मणि के अनुसार किसी भी पुस्तक से नहीं सकते हैं।

- (३) पढ़ते ए हुए कठिन शब्दों का अर्थ जानने के लिए शब्दकोश का सहारा ले सकते हैं।
 यह लिखित भाषा का विस्तार है।
 (४) यह चिंतन, विचार व विश्लेषण का माध्यम है।
 (५) इसे हम जीव समय तक समालकर रख सकते हैं।
 (६)



- (१) यह निरधारों के लिए किसी काम का नहीं है।
 मुद्रित माध्यम के दृष्टिकोण की समय सीमा का व्यान रखना पड़ता है। ऐसे अखबारों में २५ दिनों में से शत १२ बाजे के बाद प्रकाशन के लिए कोई सामग्री नहीं ली जाती।
 जगह सीमित होने के कारण स्वित का व्यान रखना पड़ता है।
 (३) समाचार में लटना के महत्व के आधार पर स्वित का विभाजन किया जाता है।

प्रश्न = 10

(ख)

उत्तर - कैमरे में बैंद अपाहिज कविता ~~रहुनीर सहाय द्वारा रचित~~

कात्य संग्रह 'लोग भूल गए हैं, से लिया गया है।

इस कविता के माध्यम से कवि मीठिया ने दुरदर्शनकल्पांगी

संविदनहीनता

वे

करता

को

उजागर

करता

है। वे

अपने कार्यक्रम की व्यापसाचिक्षण की बदाने वे धन

कमाने

के लिए

एक

अपाहिज

व्यक्ति

को

कैमरे

के

जीवों

को

अपाहिज

के

कोई

सामने छोड़ा कर उससे अपाहिज प्रश्न ~~पूछते हैं। मीठिया~~

की

जीवों

को

अपाहिज

व्यक्ति

को

मीढ़ा

से

कोई

जीवों

को

अपाहिज

की बीचने

लेना - उन्होंने नहीं है। वे अपाहिज व्यक्ति की मीढ़ा की बीचने

अपना

कार्यक्रम

साक्ष

वे

जीवों

वानाते

हैं।

अतः मीठिया का सामाजिक सरोकार मात्र यह

विवाहा है।

(ग)

उत्तर - बाल राग, कविता खूबिकांत शिष्टाचल विराला द्वारा रचित

“अनाजिका” नामक काल्य संग्रह से ली गई है।

इस कविता में कवि वादलों को शोषिति का दृष्ट
भानकर उनका आड़वान करता है। वादलों का आड़वान
समाज का शोषित वर्ग करता है। शोषिति शोषक वर्ग
के उनका व्युव शोषण किया है। अतः नव नीवन के
निमित्त उत्तर शोषित वर्ग वादलों को भला रहा है कि
वे आए उनका नव निमित्त करें। शोषिति से हमेशा छोटी
लाभ पाते हैं। शोषिति से हमेशा शोषक वर्ग के
पूर्णपत्रियों का विनाश होता है। कि समाज का सारा
वे आव जीड़ते रहते हैं। कि शोषित वर्ग का शोषण करते
रहते हैं। अतः शोषिति रमी वादल की उनका उदार कर
सकते हैं।

प्रश्न - ॥

(ख) चौ प्रसिद्धया॑ स्वाइया॑ नामक कविता से ली गई है।

उत्तर -

इसमें कहि जे माँ को बासल्या की लड़न किया है।
 माँ अपने बच्चे को निमिल जल से नह लाती है व
 उसके उबड़े हुए बालों की कही करती है। बाद में
 माँ बच्चे को दूरनियों की रवाकर उसे कपड़े पहनाती
 है। बच्चा माँ की तरफ प्रभ वर्षा के से दूरता है।
 अतः इससे माँ का अपने बच्चे के सति वाल्सल्य
 प्रभ व्यक्त हुआ है।

(३)

उत्तर

बात जीधी भी पर, कहिता कुल नगर नगराया करा
 रखित कोई दूसरा नहीं। काल्य धूग्रह से ली गई है।
 इस रखित में भाषा वे चेंग की समानता बताते हुए
 कहि बताना वे चाहता है कि लिख प्रकाश वेंच की
 विवरित हुई पर भी कसा जाता है, उसी प्रकार हमें
 भी अपनी भरल व जीधी बात की सहज भाषा की माफ्यम
 ही ही कहना चाहिए। चेंग की ज्यादा उसमें से उसकी हुई
 नर जाती है त्रिक उसी प्रकार दिवावटी व अदिवरणा युग्म
 भाषा का प्रयोग करनी सी कहिता का बह दी जाता है।

अतः वाला की सहजता पर जोर देना चाहिए।

प्रश्न = 12

(क)

उत्तर १ आस्तिन श्री सर्वज्ञा संपन्न नहीं श्री, उसमें श्री अनेक दुर्द्विष्ठा मौजूद थे। आस्तिन मैं निरन्मात्रित दुर्द्विष्ठा श्री-

- (1) वह ~~कृष्ण~~ इधर-उधर पड़े चैसों को उठाकर भीउर ग्रह की भट्टकी चैंगूली देती थी। वह ~~मुद्दाने~~ पर इसे चैसों की चौरी नहीं दाताती थी बल्कि चैसों को संभालकर रखना कहती थी।
- (2) वह ~~लीचियों~~ को अब्जा करने के लिए घात की इधर ~~दुर्द्विष्ठा~~ घाताती थी।
- (3) वह ~~सल्योवादी~~ हरिशाचंद्र नहीं थी।
- (4) वह शास्त्री श्री अपनी दृष्टानुसार व्याख्या करती थी।

(5) वह दुसरे को अपने अनुसार ठाल लेती थी पर इवयः
नहीं बढ़ती थी।

अतः कीक ही कहा गया है कि, कोई भी व्याप्ति सर्विका स्वप्न
नहीं होता, अस्तित्व की उसका उपवाद नहीं थी।

(ब)

भाजार की ओर कहा गया है कि व्यापक वह लोगों को
अपनी ओर आकर्षित करता है। बाजार की व्यापक
व्याप्ति के मन - समिक्षक पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वह
बाजार की चर्काचींद्य उपचार उसकी ओर रखी थी यहां पर
है। वह बाजार से अनावश्यक वस्तु खरीद लाता है।
पर व्याप्ति का मन रात्रि होता है तब तो बाजार का
पार निश्चिन्त चलता है। वह उपचार वस्त्री करने लगता
है।

इस चक्काचींद्य से बचने का एकमात्र उपाय है — पार मन
रात्रि हो तब बाजार नहीं होता चाहिए। मन लद्य से भरा
होने पर ही बाजार नहीं होता। अस्ति अवश्यकता

अनुसार वस्तुतः राजीदनी चाहिए ।

मरण = 13

(क)

उत्तर । मेरी कल्पना का आदर्श समाज, पाठ में जाति प्रथा के निषेक लीगों को जीवन, जैरधा व संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता ही परम में है। पर ये जाति प्रथा के निषेक लीगों को अपना व्यवसाय रखें। युनेन की स्वतंत्रता नहीं। प्रदान करते हैं। ये व्यक्ति को बेटुक देश। युनेन की विवश करते हैं। जाति प्रथा के कर्ता श्रम के साथ-साथ अभिकी का भी अस्वाक्षाविक विकास होता है जीवि-गत है इसमें। ज्ञान का विभाजन व्यक्ति की सचिवत भगता पर आवारित नहीं होता।

(गा) (संख्या)

उत्तर

भासितन 'पाठ' के खोले सिंहों की उक्साल भासितन की
कहा गया है व्योंकि भासितन ने परिवार की जीव
में उत्कर लीन उत्तियों को जन्म दिया था। उस समय
उत्तियों की सम्मान नहीं दिया जाता था। भासितन की
प्रौढ़तियों व सास में उत्तियों को जन्म दिया था पर
भासितन ने कहा कि लिए तीन उत्तियों को जन्म दिया था।
उस कारण भासितन के साथ बुद्धाव उर्ध्व व्यवहार किया
जाता था व उसकी उत्तियों से वर का सारा काम
कराया जाता था।